# अभिषेक

दूरावनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटी-संलग्न-रत्न-किरण-च्छवि-धूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तमपिप्रकृष्टै-र्भक्तयाजलैर्जिनपतिं बहुधाभिऽभिषिञ्चे॥

(ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये अम्बूद्वीपे भरतक्षेत्र आर्यखण्डे.... नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे ... मासे पक्षे... शुभदिने.... वासरे पौर्वाह्निक समये मुनि-आर्यिका श्रावक-श्राविकानाम् सकलकर्म क्षयार्थं जलेनाभिषञ्चे नमः)

(यह पढ़कर श्री जिन प्रतिमा पर कलश से जल की धारा छोड़े तथा उदक चंदन... श्लोक पढ़कर अर्घ चढ़ावें)

## अभिषेक (हिन्दी)

श्री जिनवर चौबीस वर, कुनयध्वांतहर भान ।
अमितवीर्यदृगबोधसुख, युत तिष्ठौ इहि थान॥१॥

नाराच छन्द

गिरीश शीश पांडुपै, सचीश ईश थापियो। महोत्सवों अनंदकंदको, सवै तहाँ कियो॥
हमै सो शक्ति नाहिं, व्यक्त देखि हेतु आपना। यहाँ करै जिनेन्द्रचंद्रकी सुबिंब थापना॥२॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करके श्रीवर्ण पर जिनबिम्ब की स्थापना करना)

सुन्दरी छन्द

कनकमणिमय कुंभ सुहावने, हरि सुक्षर भरे अति पावने।
हम सुवासित नीर यहाँ भरैं, जगतापावन-पाँय तरैं धरैं॥३॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करके वेदी के कोनों में चार कलशों की स्थापना करना)

हरिगीतिका दन्द

शुद्धोपयोग समान भ्रमहर, परम सौरभ पावनो।
आकृष्टभृंगसमूह गंग समुद्रवो अति भावनो॥
मणिकनककुम्भ निसुम्भ किल्विष, विमल शीतल भरि धरौ।
श्रम स्वेद मद निरवार जिन त्रय धार दे पांयनि परौं॥४॥

(मन्त्र से शुद्ध जल की तीन धारा जिनबिम्ब पर छोड़ना)

अति मधुर जिनधुनि सम सुप्रीणित प्राणिवर्ग सुभावसों।
बुधचित्तसम हरिचित्त नित्त, सुमिष्ट इष्ट उछावसो॥
तत्काल इक्षुसमुत्थ प्रासुक रतनकुंभविषै भरौं।
यह त्रास-ताप निवार जिन त्रय धार दे पांयनि परौं॥५॥

(ऊपर का मन्त्र पढ़कर इक्षुरस की धार देना)

निष्तासक्षिसुसुवर्णमददमनीय ज्यौं विधि जैनकी। आयुप्रदा बलबुद्धिदा रक्ष, सु यो जिय-सैनकी॥
तत्काल मंथित, क्षीर उत्थित, प्राज्य मणिझारी भरौं। दीजै अतुलबल मोहि जिन, त्रय धार दे पायनि परौं ॥६॥

( घृतरस की धारा देना )

शरदभ्र शुभ्र सुहाटकद्युति, सुरभि पावन सोहनो। क्लीवत्वहर बल धरन पूरन, पय सकल मनमोहनो॥
कृतउष्ण गोथनतैं समाहृत मणिजटितघट मैं भरौं। दुर्बल दशा मो मेट जिन त्रयधार दे पायनि परौं ॥७॥

( दुग्ध की धारा देना )

वर विशदजैनाचार्य ज्यों लघुराम्ल कर्कशता धरैं। शुचिकर रसिक मंथन विमंथित नेह दोनों अनुसरैं॥
गोदधि सुमणिभृंगार पूरन लायकर आगैं धरौं। दुखदोष कोष निवार जिन त्रयधार दे पायनि परौं ॥८॥

( दही की धारा )

सवौंषधी मिलायके, भरि कंचन-भृंङ्गार।
जजौं चरण त्रयधार रे, तारतार भवपार॥

( सवौषधि की धारा देना )

## अभिषेक पाठ (हिन्दी)

मैं परम पूज्य जिनेन्द्र प्रभु को, भाव से वन्दन करूँ।
मन वचन काय त्रियोग पूर्वक शीश चरणों में धरूँ ॥१॥

सर्वज्ञ केवलज्ञान धारी की सुछवि उर में धरूँ।
निग्रन्थ पावन वीतराग महान की जय उच्चरूँ ॥२॥

उज्जवल दिगम्बर वेश दर्शन कर हृदय आनन्द भरूँ।
अति विनय पूर्व नमन करके सफल यह नरभव करूँ ॥३॥

मैं शुद्ध जल के कलश प्रभु के पूज्य मस्तक पर करूँ।
जलधार देकर हर्ष से अभिषेक प्रभु जी का करूँ ॥४॥

मैं न्हवन प्रभु का भाव से कर सकल भावपातक हरूँ।
प्रभु चरण कमल पखारकर सम्यक्त्व की सम्पत्ति वरूँ ॥५॥

## जिनेन्द्र अभिषेक स्तुति

मैंने प्रभु के चरण पखारे।
जनम, जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे ॥१॥
प्रासुक जल के कलश श्री जिन प्रतिमा ऊपर ढारे।
वीतराग अरिहन्त देव के गूंजे जय जयकारे ॥२॥
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे।
पावन तन, मन, नयन भये सब दूर भये अंधियारे ॥३॥